Item Code: 642 Participant Code: 027

यादों के पास...

समय सायं संध्या। आकाश में लालिमा छा गए। चिड़ियाँ अपने थके हुए यात्रा के बाद अपने-अपने घोसले की ओर जाने लगा। उस समय एक स्कूल से बेल चिल्लाया। जब बेल चिल्लाया तब बच्चों ने एक चीनी देखकर भागनेवाली चींटी के तरह भागकर गेट तक पहुँचा। उस समय मीना नामक दो साल की लड़की अपने पिता को देखकर भागा और जब उनके पास पहुँचे तो पत्ते पे गिरा एक बूँद जैसे वह उनकी पिता के हाथ में गिरा। उसको गले लगाकर पिता स्कूल के विशेष पूछा। वह पूरी बात बताने लगा। उस समय मीना की पड़ोसी विनु नामक एक लड़का आया। वह भी इस दोनों के बात करने लगा। मीनू के साथ विनु को भी लेकर वह जाना पड़ा।

घर में बरामदे पर मीना के माँ और दादी खड़े थे। जब मीना घर पहूँचे उसने उन दोनों को गले लगाया। कुछ समय के बाद, अपनी पढ़ाई करके माँ और दादी से स्कूल की बात करने लगा। उसके बाद वह खाना खाकर सो पड़ा।

~~अगली~~ अगले दिन की सुबह, आकाश सूरज के किरणों से चमक रहे थे। चिड़ियां अपने मधुर गीत शुरू कर दिया था। उस आवाज़ सुनकर मीना उठा। उस समय ~~आ~~ उनकी

माँ ने आया और उसको बुलाया "बेटी उठो, स्कूल जाना है न?" मीना ने उत्तर दिया "माँ, मैं आपके आने से पहले से ही उठ गया था। मैं बड़ी हो गई, है न माँ?"। माँ ने ~~बोला "हाँ~~ मुसकराते हुए कहा "हाँ... हाँ"। उसके बाद मीना ने स्कूल जाने के लिए तैयार हुआ। हर स्कूल के दिन के जैसे यह दिन भी बीत गया।

जब बेल चिल्लाया बच्चों ने गेट पर आया। पर आज मीना के पिता वहाँ नहीं था। उसके मन अंधेरे से भर गया। ~~आ~~ उस समय विनु ने आया और मीना को बुलाया "हे मीना! क्या हुआ। मीना को कुछ भी कह न सका। वह उस तरफ देखा जहाँ उसकी पिता आते थे। जब विनु ने उसकी आँखों से मीना के आँखों को ~~प~~ पीछा करा उसको अपनी बात समझा। वह मीना की ओर देखकर कहा "तुम्हारी पापा कुछ काम में होंगे। डरो मत। चलो..."। यह कहकर मीना के हाथ उसके हाथ में लेकर विनु चलना पड़ा। मीना को उसकी घर पर छोड़कर विनु अपने घर गया। जब मीना बरामदे में पहुँचा वहाँ कोई नहीं था। उस घर की दरवाज़ा बंद था। मीना ने घबराकर बरामदे के एक कोने में बैठा।

उस समय विनु के घर में, विनु अपने माँ से बात करता था "माँ, हमारे पड़ोस घर से कोई आवाज़ न सुनता, वहाँ

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി..... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

मीना अकेला है। मैं देखके आऊँ" माँ ने बोला "हाँ"। विनु ने मीना की घर पहुँचा। वहाँ बरामदे में मीना था। वह रो रहा था। विनु ने उसकी पास चलकर उसको आश्वास करने के ~~लिए~~ लिए कुछ बात बताया। उस समय एक आदमी मीना के घर में आया। विनु ने वह आदमी को पहचान लिया। वह बाज़ार में दूकान चलाने वाली गोपालजी था। वह भागने से थका हुआ था। विनु ने पूछा "क्या हुआ गोपालजी?" गोपालजी ने उत्तर दिया "बेटा बाज़ार में एक अपकट हुआ। दो गाड़ियों के बीच। एक गाड़ी में तीन लोग थे। वह तीनों भी मर गया। वह तीनों मीना की परिवार है।" यह कहकर गोपालजी ~~रोना~~ रोना शुरू किया। विनु ने खबराया। गोपालजी ने फिर कहा "ऑबुलेन्स आएँगे अब"। उस समय ऑबुलेन्स आया और उस गाड़ी की आवाज सुनकर विनु की माँ भी आया। ~~तीनों के~~ तीन शवशरीर वह आँगन में सो पड़ा। कर्म के बाद कुछ भी न समझते हुए मीना को लेकर विनु और माँ उस गाँव ~~से~~ से एक शहर में जा पड़ा। मीना ~~जब~~ के परिवार सोने वाले वह गाँव से मीना चल पड़ी।

बीस साल के बाद, फ्लाट एक कोने बैठके ~~जब~~ विनु 'यह कथा अपने नहीं है' जैसे मीना से कहकर बंद कर दिया। दोनों रो रहा था। ~~से~~ रोने से बीच मीना ने कहा "तुम्हे पता

है, जब मैं आईने में देखती, मैं मुझसे ही पूछता है "मैं कौन हूँ?" आज मुझे उसका उत्तर मिल गया है विनु। जब दोस्तों के माँ-बाप स्कूल में आती हैं उस समय भी मैं सोचता हूँ मेरी माँ-बाप कहाँ गई? उसके लिए भी मुझे उत्तर मिला है अब।" कुछ समय के बाद विनु ने एक चित्र देखकर कहा "हमारे प्रिय लोग हमें हम सोचने के ~~पहले~~ पहले से छोड़कर जाते हैं, है न?" मीना विनु के आँखों को अपनी आँखों से पीछा किया, वह चित्र विनु का माँ का था। मीना को कुछ ~~कह~~ कह न पाया। ~~वह~~ पर भी उसको उत्तर देने के लिए मीना ने कहा "हाँ... विनु।" यह कहकर वह दोनों अपनी ~~माँ-बाप औ~~ परिवार के साथ हुए हर संभव को याद की.......